2

वर्ली चित्रकला

अभी तक आपने भिन्न-भिन्न प्रकार की मधुबनी लोककला के बारे में जानकारी हासिल की। इस पाठ में आप वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले भित्ति चित्र वर्ली के बारे में पढ़ेंगे। वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले भित्तिचित्र वर्ली चित्र कहलाते हैं। भारत के महाराष्ट्र राज्य के दाहाणू एवं तलासरी तालुकों में बसने वाले वर्ली आदिवासियों में अनुष्ठानिक भित्तिचित्र बनाने की सुदीर्घ परम्परा है। इनमें जन्म, मृत्यु तथा विवाह के अनुष्ठानों पर स्त्रियों द्वारा भूमिचित्र भी बनाए जाते हैं। विवाह समारोह के अनुष्ठानों में बनाए जाने वाले पालघट देवी के लिए पालघट चौक केवल सुहागन स्त्रियों द्वारा बनाए जाते हैं। वास्तव में इन चित्रों में वर्ली आदिवासियों का विश्वदर्शन, उनके देवकुल, उनके दैनिक जीवन की गतिविधियां तथा उनके गांव तथा पर्यावरण, पशु-पक्षी एवं वनस्पति की सुन्दर झांकी देखने को मिलती है। चित्र के मध्य में चौकोर, चौक बनाया जाता है। कभी-कभी यह चौक ज्यामितीय आकारों जैसे- अर्द्ध गोलाकार, एक दूसरे को काटती रेखाओं, कंगूरों, बिन्दुओं, रेखाखण्डों से संयोजित होता है। कभी-कभी बॉर्डर की सज्जा कुछ मोटिफ जैसे बासिंग (वर-वधू) द्वारा विवाह में पहने जाने वाले मौर, कंघी एवं सांकल आदि जैसे अभिप्रायों की पुनरावृत्ति से की जाती है। चौक के मध्य में दो लम्बवत एवं सम्मुख शीर्ष वाले त्रिभुजों को जोड़कर पालघट देवी की आकृति चित्रित की जाती है। चौक के मध्य शीर्ष स्थान में कभी-कभी चंद्र, सूर्य, कंघी, फूल, सीढ़ी एवं बासिंग आदि भी चित्रित किए जाते हैं। चौक के बाहर दीवार के ऊपरी भाग में वर्ली देवकुल के अन्य देवों, जैसे- बाघदेव, पाँच सिरया, हिरोबा, चंद्रदेव एवं सूर्यदेव के साथ विवाह की अनेक गतिविधियाँ, कृषिकर्म, नृत्य करते युवक-युवतियाँ, बाराती, पोड़ पौधे एवं पशु-पक्षी आदि चित्रित किए जाते हैं। यह चित्रकारी सामूहिक रूप से की जाती है।

पुरातत्वविज्ञानियों के मतानुसार, वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले भित्तिचित्र, मध्य भारत के उन गुफाचित्रों का विस्तार प्रतीत होते हैं जिन्हें नियोलिथिक शैलचित्रों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इस काल के गुफाचित्रों की विशेषता सफेद बाह्यरेखा, त्रिभुजाकार शरीर वाली मानव एवं पशु-पक्षी आकृतियां तथा ज्यामितीय चित्रण है। वर्ली चित्रों में बनाई जाने वाली आकृतियाँ विवरणविहीन छायाओं की भांति सादगीपूर्ण परन्तु वेगवान, गुफाचित्रों के समान परिलक्षित होती हैं। पिछले कुछ वर्षों में स्त्रियों की इस चित्रकला को जीविका उपार्जन हेतु पुरुषों द्वारा भी अपना

लिया गया हैं, जो शहरी बाजार में बेचने के लिए परम्परागत चित्रों को एक नये समकालीन रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं तदनुसार अभ्यास करने के उपरान्त आप :

- वर्ली चित्र परम्परा का वर्णन कर पायेंगे;
- वर्ली आदिवासियों एवं नियोलिथिक काल के गुफाचित्रों के मध्य साम्य का विश्लेषण कर सकेंगे;
- अनुष्ठान एवं अवसरों पर बनाये जाने वाले वर्ली चित्रों के मध्य सम्बन्ध पर चर्चा कर सकेंगे;
- वर्ली चित्रों में प्रयुक्त चित्रण सामग्री को पहचान कर सकेंगे;
- वर्ली चित्रों में चित्रांकित विभिन्न अभिप्रायों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

2.1 सामान्य परिचय

शिक्षार्थी, अब हम वर्ली चित्रों के सामान्य परिचय से अवगत होंगे। वर्ली चित्रकला भारत के महाराष्ट्र राज्य के दाहाणू और तालासरी इलाकों में बसने वाले वर्ली आदिवासियों द्वारा पारम्परिक अनुष्ठानों में भित्ति चित्र बनाने की परम्परा है। इनमें जन्म, मृत्यु और विवाह के अनुष्ठानों में महिलाओं द्वारा चित्र बनाये जाते है, जिनमें पालघट चौक सुहागिन स्त्रियों द्वारा पालघट देवी के लिये बनाया जाता है। वर्ली चित्रकला की विशेषता है कि इसमें आदिवासियों के दैनिक जीवन की गतिविधियों, गांव, पर्यावरण, पशु-पक्षी, देवी-देवता आदि की झलक मिलती है। कभी-कभी ये चौक ज्यामितीय आकारों, जैसे- अर्द्ध गोलाकार, एक दूसरे को काटती रेखाओं, बिन्दुओं द्वारा बनाया जाता है। भित्ति चित्र में ज्यादातर चन्द्र, सूर्य, कंधी, फूल सीढ़ी के अलावा देवकुल के देवताओं, जैसे- वाघदेव, पांच सिरया, हिरोबा, चन्द्रदेव, सूर्यदेव के साथ-साथ विवाह की अनेक गतिविधियों, नृत्य करते स्त्री पुरुष, बाराती, पशु पक्षी के सामूहिक चित्र बनाये जाते हैं। वर्ली आदिवासियों द्वारा बनाये गये चित्रों की विशेषता है त्रिभुजाकार शरीर वाले मानव। पहले स्त्रियां ही इस कला में हिस्सा लेती थीं, परन्तु अब पुरुषों ने भी इस कला को अपनाकर रोजगार का अच्छा माध्यम बना लिया है।

2.2 पारम्परिक वर्ली मोटिफ/अभिप्राय

वर्ली चित्रों में अंकित किए जाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण मोटिफ निम्न हैं-

- **पालघट देवी का चौक**- विवाह के अनुष्ठान चित्रों में इसका केन्द्रीय महत्व है। इसमें चौकोर चौक के मध्य एक देवी आकृति चित्रित की जाती है।
- **पाँच सिरया**- यह पाँच सिरवाले घुड़सवार के रूप में चित्रित किया जाता है। इसे एक चौक के मध्य या बिना चौक के बनाया जा सकता है और यह रक्षक देव है।

- **बाघदेव**– लकड़ी के खम्बे, जिस पर बाघ प्रतिमा बनी हो, के रूप में चित्रित किया जाता है।

- **चंद्र-सूर्य**– आदिवासी प्राकृतिक शक्तियों के रूप में इन्हें पूज्य मानते हैं।

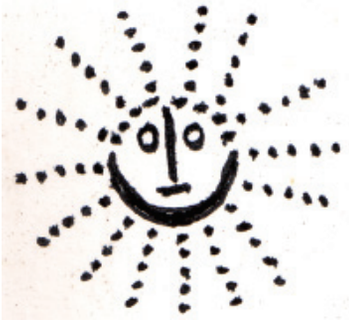

- **घुड़सवार दुल्हा-दुल्हन**– विवाह अनुष्ठान हेतु बनाए जाने वाले चित्रों में घोड़े पर सवार दूल्हा या बंदनवार में खड़े दुल्हा-दुल्हन प्रमुखता से बनाए जाते हैं।

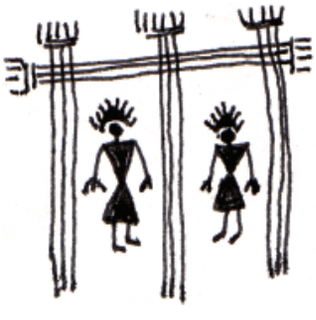

- **मुकुट/मौर**– विवाह चित्रों में वर-वधू द्वारा सिर पर पहने जाने वाले मौर, जिन्हें सेहरा कहते हैं, चित्रित किए जाते हैं।

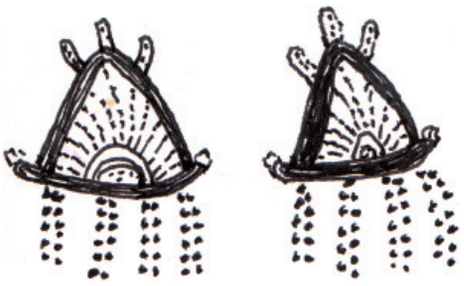

- **वनस्पति**– वर्ली चित्रों में ताड़ एवं अन्य वनस्पतियों का चित्रण बहुतायत से किया जाता है।

- **मानव आकृतियाँ**– विभिन्न गतिविधियों में संलग्न मानव आकृतियाँ, वर्ली चित्रों का अभिन्न अंग है। इन्हें नृत्य करते, बराती, भगत, कृषक, शिकारी एवं अन्य दैनिक कार्य करते स्त्री पुरुष के रूप में चित्रित किया जाता है।

- **पशु-पक्षी**– पशु-पक्षी आकृतियों का सुन्दर निरूपण वर्ली चित्रों में होता है। इनमें मोर, हिरण, बकरी, घोड़ा, मुर्गा, मुर्गी, गाय, शेर, चिड़ियाँ, मकड़ी, चीटी, सियार, सारस आदि प्रमुख हैं।

- **चरवाहा**– बकरी एवं गाय चराने ले जाता चरवाहा वर्ली चित्रों का महत्वपूर्ण अंग है।

- **तारपा**– यह एक वाद्ययंत्र होता है जिसे बजाते हुए तारपा नृत्य करते युवक-युवतियों की टोली वर्ली चित्रों का सर्वाधिक लोकप्रिय दृश्य है।

- **ताड़ी उतारता युवक**– ताड़ वृक्ष से ताड़ी उतारने हेतु वृक्ष पर चढ़ती मानव आकृति वर्ली जीवन की एक महत्वपूर्ण गतिविधि दर्शाती है।

चित्र 2.1

2.3 आवश्यक सामग्री

वर्ली चित्र बनाने हेतु विद्यार्थी के लिए आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- ड्राइंग पिन
- पेंसिल
- रबर
- फैवीकोल
- स्केल
- ड्राइंग शीट या मारकीन कपड़ा
- 1, 3 एवं 7 नम्बर की गोल मुलायम ब्रश
- सफेद एवं भूरा (ब्राउन) पोस्टर रंग (कलर) तथा गेरू
- प्लास्टिक का छोटा मग

2.4 वर्ली चित्रकला की पारम्परिक विधि

चलिये चित्र के पृष्ठभूमि तैयार करना सीखें।

- ड्राइंग शीट या बिना धुले मानकीन कपड़े का 14" × 20" का टुकड़ा लें।
- इस पर स्केल एवं पेंसिल की सहायता से चारों ओर 1" चौड़ा हाशिया बनाएं। इस प्रकार कागज/कपड़े पर 12" × 18" का एक आयताकार प्राप्त होगा।
- अब गेरू को पानी में घोलकर एक गाढ़ा घोल तैयार करें। इसमें थोड़ा फैवीकॉल मिला लें ताकि जब गेरू कागज/कपड़े पर लगाया जाए तो वह हाथ लगाने पर कागज/कपड़े से छूटे नहीं।
- तैयार गैरू के घोल को 7 नम्बर ब्रुश की सहायता से कागज/कपड़े पर तैयार किए गए 12" × 18" के आयताकार में सफाई के साथ सपाट भरें। तदुपरान्त कागज/कपड़े को सूखने हेतु रख दें। इस प्रकार चित्रण हेतु भूरे रंग की पृष्ठभूमि तैयार हो जाएगी।
- तैयार पृष्ठभूमि पर उंगली रगड़ कर देखें, यदि रंग छूटता है तो गेरू के घोल में थोड़ा और फैवीकॉल मिलाए एवं पुनः रंग भरें।
- चित्रण हेतु उपयुक्त सतह तैयार करने के लिए गेरू के घोल के कम से कम दो कोट करना आवश्यक है। दूसरा कोट करने से पहले ये देखना जरूरी है कि पहला कोट पूर्णतः सूख गया हो।

प्रायोगिक अभ्यास 1

- ड्राइंग शीट पर वर्ली आदिवासियों द्वारा विवाह के अवसर पर बनाए जाने वाले पालघट देवी के चौक को केन्द्र में रखते हुए चित्र संयोजन करें।

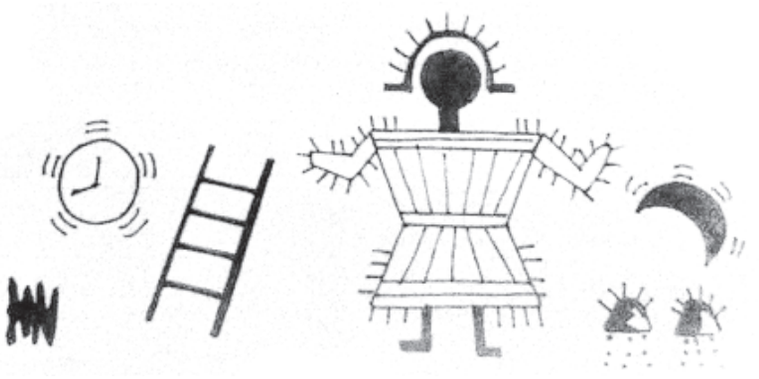

चित्र 2.2

- सर्वप्रथम पालघाट देवी के चौक एवं विवाह सम्बन्धी अन्य वर्ली मोटिफ का चयन करें।

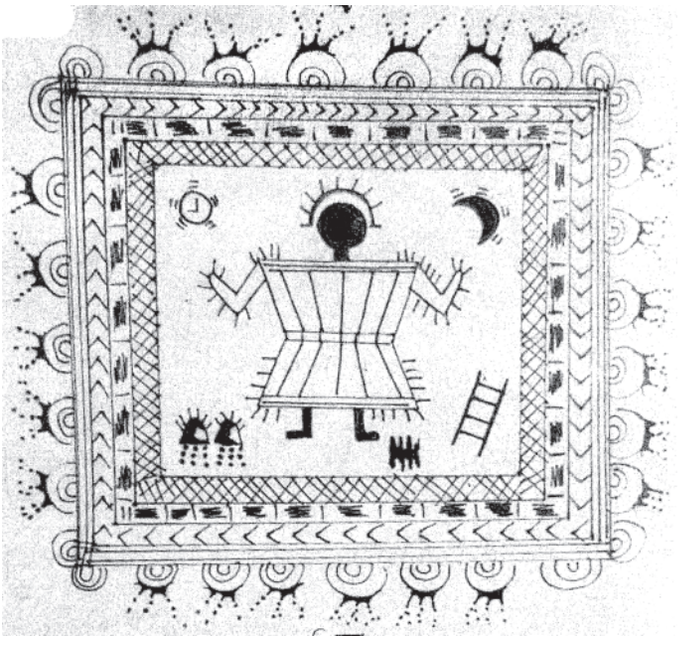

चित्र 2.3

- चयन किए गए मोटिफ को ध्यान में रखते हुए अपने मन में एक चित्र संजोजन की कल्पना करें। अपनी कल्पना के अनुरूप ड्राइंग शीट पर, गहरा भूरा रंग लगाकर पहले से तैयार की गई पृष्ठभूमि पर, पेंसिल से उन सभी मोटिफ्स का स्थान एवं सामान्य आकार सुनिश्चित करें जो आप चित्रित करना चाहते हैं। ध्यान रहे मध्य भाग में पालघाट देवी का चौक बनाया जाएगा।

- अब पैंसिल से उन सभी आकृतियों का सटीक रेखांकन कर लें जो चित्रांकित की जा रही हैं।

चित्र 2.4

- अब 1 नम्बर ब्रुश की सहायता से सफेद पोस्टर कलर द्वारा प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा बना लें।

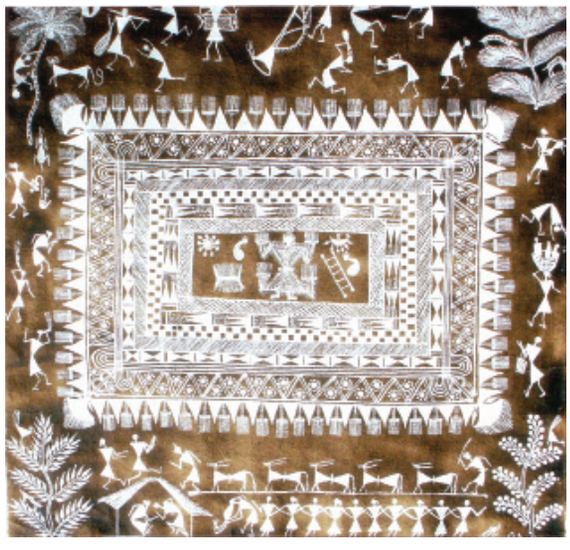

चित्र 2.5

- इसके बाद 3 नम्बर ब्रुश की सहायता से प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा के मध्य सपाट सफेद रंग भरें। अन्त में चित्रित की गई मानव एवं पशु-पक्षी आकृतियों के हाथ-पैर एवं सिर आदि स्पष्ट कर लें।

मानव एवं पशु आकृतियाँ बनाते समय यह ध्यान रखना है कि उनके शरीर का चित्रण सम्मुख शीर्ष वाले दो त्रिभुजों के शीर्ष मिलाकर करना है। मानव आकृति बनाते समय ये त्रिभुज लम्बवत होंगे तथा पशु आकृति हेतु इन्हें क्षितिज बनाया जाएगा।

प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम दूसरा वर्ली चित्र बनाते हैं। कपड़े पर वर्ली चित्र संयोजित करने के लिए ताड़ वृक्ष से ताड़ी उतारने का दृश्य बनायेंगे।

- आपको मारकीन कपड़े पर गेरू से तैयार की गई पृष्ठभूमि पर अपनी रुचि के अनुरूप वर्ली मोटिफ चुनकर संयोजित करना है। अपनी कल्पना में एक वर्ली चित्र का संयोजन करें।
- काल्पनिक संयोजन के अनुसार पेंसिल से कपड़े पर तैयार पृष्ठभूमि पर चित्रित किए जाने वाले विभिन्न मोटिफ्स का स्थान एवं आकार चिन्हित करें।

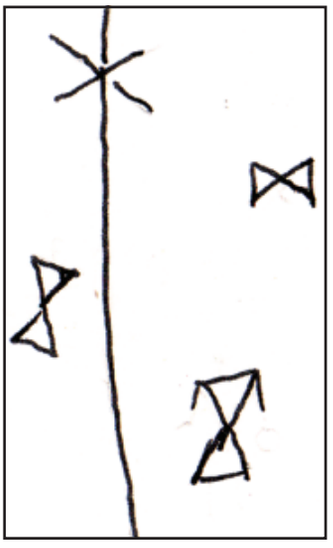

चित्र 2.6

- प्रत्येक आकृति का पेंसिल से रेखांकन कर लें।

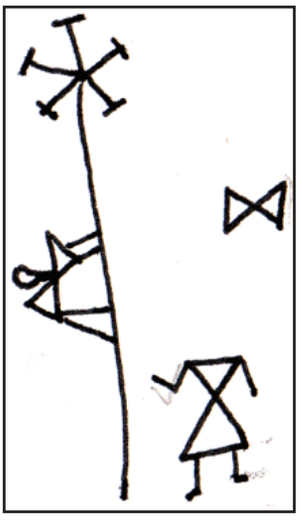

चित्र 2.7

- इसके बाद एक नम्बर के ब्रुश से सफेद पोस्टर कलर द्वारा प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा बनाएं।

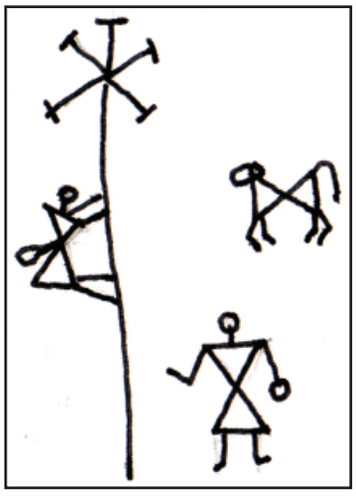

चित्र 2.8

- अब तीन नम्बर के ब्रुश से सभी आकृतियों के अन्दर सपाट सफेद रंग भरें। अन्त में मानव एवं पशु-पक्षी की आकृतियों के हाथ-पैर, सिर आदि स्पष्ट करें।

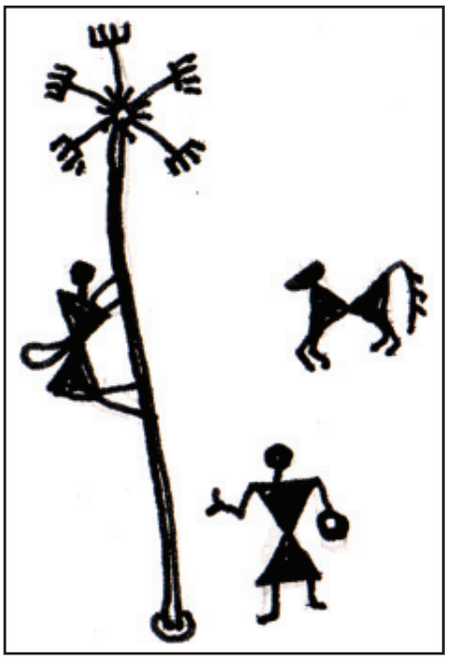

चित्र 2.9

मानव एवं पशु आकृतियाँ बनाते समय यह ध्यान रहे कि उनका चित्रण एक दूसरे की ओर शीर्ष वाले दो त्रिभुजों को मिलाकर करना है। मानव आकृति हेतु यह त्रिभुज एक के ऊपर एक होंगे तथा पशु आकृति हेतु इन्हें एक दूसरे के सामने रखना है।

चित्र 2.10

आपने क्या सीखा

वर्ली कला

प्रारम्भिक युग
- महाराष्ट्र में उत्पन्न हुई और फैली
- दीवार पर बनने वाली चित्रकला
- धार्मिक व सामाजिक अवसरों पर प्रयोग होती है
- त्रिभुजाकार आकृतियों का प्रयोग
- मानव और पशु-पक्षी आकृतियों का अंकन
- स्त्रियों द्वारा बनता है।

आधुनिक युग
- पुरुषों द्वारा भी बनने लगा
- दीवारों के अलावा कपड़े और कागज पर बनने लगा
- अलंकृत लकड़ी के पट्टों का प्रयोग
- अलंकृत मिट्टी के बर्तनों पर अलंकरण

पाठांत प्रश्न

1. वर्ली चित्रों की चित्रांकन सम्बन्धी कोई चार विशेषताएँ लिखिए।
2. वर्ली चित्रों के बनाए जाने वाले पालघट देवी के चौक का रेखांकन करें।
3. घोड़ा सवार पाँच सिरया देव एवं बाघ देव का चित्र बनाएँ।
4. ताड़ी वृक्ष से ताड़ी उतारते वर्ली युवक का रेखांकन करें।

5. तारपा नृत्य करती वर्ली युवक-युवतियों की टोली का चित्र बनाएँ।

6. घोड़ा सवार दूल्हा एवं बारातियों का चित्रांकन करें।

7. वर्ली चित्रों में चित्रित किए जाने वाले महत्वपूर्ण अभिप्रायों को संयोजित कर चित्र की रचना करें।

शब्दकोश

भित्तिचित्र	:	दीवार पर बनाए जाने वाले चित्र
अनुष्ठानिक	:	पूजा विधियों से सम्बन्धित
बासिंग	:	वर-वधू द्वारा पहना जाने वाला मुकुट
कृषिकर्म	:	खेती से संबंधित कार्य
जीविका उपार्जन	:	रोजी कमाने का साधन
वेगवान	:	गतिशील